iape v/;k;

milagkj

fu"d"k

i:pe v/;k;
mil gkj @ fu"d"k

mil gkj

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट हुआ है कि कृष्णमुरारी शर्मा एक संवेदनशील साहित्यकार हैं, और उनकी सृजनधर्मिता की मूल प्रेरणा सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं नैतिक चेतना का परिष्कार करना है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के रचना संसार का विश्लेषण करते हुए यह रेखांकित करना अत्यन्त आवश्यक है कि साहित्यकार, का सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जिस देश और समाज में मनुष्य अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं होते वह देश प्रगति से ही जैसे पलायन करता है। सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याओं का अभिप्राय वह अव्यवस्था अथवा अशोभनीय परम्परा एवं आपत्तिजनक स्थिति है, जिसे अधिकांश व्यक्ति निराकरण योग्य मानते हैं। किसी भी देश तथा समाज की प्रगति उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, समस्याओं के निराकरण से संभव हैं, चेतना के अभाव में समाज–संस्कृति का सृजन और पोषण संभव नहीं है। सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के अभाव में मनुष्य जाति पशुओं का समूह मात्र है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का छात्र जीवन से ही पत्रकारिता में विशेष रुचि रही। पत्रिकारिता को आपने जनसेवा का एक सशक्त माध्यम माना। जब आप दसवीं के छात्र थे तब आपकी प्रथम कविता 'श्रमी कृषक'

को एक साहित्यिक प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। यह रचना आपके गुरुजनों तथा वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा बहुत सराही गयी तब से ही आपने कविताएँ, गीत, गजल, नाटक लिखना आरम्भ कर दिया। और यह साहित्य साधना अनवरत चलती रही।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में व्यक्ति, परिवार, समाज, देश की समस्याओं तथा समाधानों पर गम्भीर रूप से विचार किया गया है। आपके साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सभी जीवन मूल्यों को लेकर सारगर्भित चर्चा की गयी है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का प्रथम काव्य संग्रह 'किरण' में राष्ट्रीयता, सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भावना का सन्देश दिया गया है, सभी सांस्कृतिक त्यौहारों, रीति–रिवाजों को हिल–मिल कर मनाने की बात की गयी है। कवि का शब्द–शब्द सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संवाहक है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का 'भू और ख के बीच सब' (दोहा संग्रह) हिंदी की प्राचीन सतसई–परम्परा तथा मुक्तक परम्परा में उनका अभिनन्दनीय योगदान रहा है। आपने दोहों के माध्यम से नीति, सदाचार, धर्म, लोक व्यवहार, भ्रातत्व, मैत्री भावना, परोपकार, सतसंग, करुणा, सेवा तथा अन्य अनेक जीवन मूल्यों का मूल्य दर्शाने के साथ–साथ अपचार, अहंकार, तृष्णा, दम्भ, पाखण्ड आदि अन्य बाह्याडम्बरों के प्रति जाग्रत करने का काम किया है तथा आपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की बात कही है।

वर्तमान समय में राजनीति में व्याप्त भृष्टाचार, जातिवाद, आरक्षण, महारक्षण, महंगाई, आदि विद्रूपों, विसंगतियों पर करारी चोट की

हैं आपकी दोहा सतसई वर्तमान राजनीति एवं सामाजिक सांस्कृतिक चेतना के सन्दर्भ में एक अत्यन्त प्रभावशाली रचना हैं। 'भू और ख के बीच सब' के दोहे नैतिक–सांस्कृतिक प्रदूषणों को समाप्त करने तथा समाज में उच्च और शाश्वत मूल्यों की पुर्नस्थापना करने के लिए दिशा बोधक सिद्ध हो सकते हैं।

'त्रिगन्धा' की मुक्तिकाओं के माध्यम से कवि ने समाज में व्याप्त ऊँच–नींच की भावनाओं को सर्वथा अनुचित कहा है और कवि ने कर्म की कसौटी को ही इसका एक मात्र साधन माना है तथा सभी सामाजिकों से प्रेम की भावना के साथ जीवन यापन करने की आशा करता है, और डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का मानना है कि जीवन रूपी उपवन को मानव अपने सदाचार से हरा–भरा बना सकता है। इसलिए मानव को तृष्णा, लालच, ईष्याएँ, द्वेष से अलग रहकर सबके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

आज के समय में मानव जीवन की निष्ठाएँ खण्डित हो चुकी हैं, नैतिकता पूरी तरह विलुप्त हो चुकी है, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में स्वार्थान्धता तथा पापाचार इतना बढ़ गया है, कि जीवन दूभर लगने लगा है। इसलिए कवि मानवीय चिन्ताओं एवं राष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट को लेकर बहत दुःखी हैं ऐसे समय में 'त्रिगन्धा' के मुक्तक बहुमूल्य साबित हो सकते हैं।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा द्वारा रचित 'पीयूषिका' (दोहा संग्रह) भक्ति एवं नीतिपरक दोहों का एक अनूठा संग्रह है तथा भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों की एक अत्यन्त समृद्ध धरोहर है। आज सामाजिक–सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का क्षरण जिस तेज गति से हो

रहा है यह चिन्ता का विषय है और ऐसे विषम समय में मानवीय चेतना तथा आध्यात्मिक प्रकाश से ही मानव को उचित रास्ते पर लाया जा सकता है।

आज व्यक्ति का कर्तव्यबोध विलुप्त हो चुका है तथा वह बिना शुभ–अशुभ का विचार किये तथा बिना न्याय–अन्याय की चिन्ता किये, कामान्धता, मदान्धता, भृष्टाचार, पापाचार आदि दुर्गुणों में लिप्त होता जा रहा है। इस नैतिक पतन से मनुष्य को बचाने के लिए 'पीयूषिका' के दोहे संजीवनी साबित हो सकते हैं।

'जन्मजात विषपाई ठहरे' काव्य संग्रह आपका प्रौढ़ स्तरीय चिन्तन है, व्यक्ति तथा राष्ट्र ही आपकी रचनाओं का माध्यम रहा है। प्रस्तुत कविता संग्रह में नैतिक–सांस्कृतिक मूल्यवान, भृष्ट–दूषित राजनीति तथा अराष्ट्रीयता आदि के प्रति आपका आक्रोशित रूप दिखाई पड़ता है। साथ ही आपकी कविताओं में देश–प्रेम, सेवा, त्याग, अध्यात्म, समरसता, सौहार्द जैसे आदर्श मूल्य भी स्पष्ट दिखलाई देते हैं।

'शेष–अशेष' काव्य संग्रह में दोहे, कविता, गजल आदि संकलित हैं, उपलब्ध रचनाओं में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ आध्यात्मिक, धार्मिक, चेतना भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है, शेष–अशेष में कवि ने भृष्टाचार, प्रदूषित राजनीति, व्यक्ति का चारित्रिक पतन, लूट–खसोट, सामाजिक अव्यवस्थाएँ आदि समस्याओं को समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक माना है, देश की जड़ों में व्याप्त भृष्टाचार को आपने वर्तमान का एक प्रवलवाद माना है और उसे 'खाओवाद' का नाम दिया है। आज जब सर्वत्र भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, मिलावटखोरी, चापलूसी, कदाचार और ऐसी ही सारी गिरावट मनुष्य चरित्र में देखकर

कवि का मन दुःखी जान पड़ता है। एक चरित्रवान, ईमानदार व्यक्ति ही स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो सकता है, जब तक समाज और राष्ट्र में ईमानदार, चरित्रवान, निष्ठावान, कर्तव्यनिष्ठ एवं परोपकारी लोगों का अभाव रहेगा तब तक कोई भी देश प्रगति की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकता।

प्रस्तुत संग्रह में कवि ने मानव की प्रत्येक साँस को ईष–वरदान माना है, इसलिए मनुष्य को हमेशा प्रतिक्षण ईश्वर का ध्यान करते हुए हमेशा सद्मार्ग पर चलना चाहिए, उनका विश्वास है कि हम जो कुछ करते हैं, उसके मूल में राम ही प्रेरणा रूप में विद्यमान हैं। 'श्रीराम' ही कवि के ईष्ट देव और जीवनादर्श भी हैं।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने धार्मिक आडम्बरों की भी कड़ी आलोचना की है, जहाँ आज ढोंगी बाबाओं द्वारा धर्म की आड़ में हो रहे अनैतिक कार्यों का भी खुलासा किया है तथा संतों का राजनीति में आना भी गलत बताया है। भारतीय समाज और संस्कृति में धर्म का स्थान महत्वपूर्ण रहा है तथा साधु–संतों का स्थान भी सबसे ऊँचा माना है। कविताकार ने भारतीय संस्कृति में गाय के असीम महत्व को भी स्वीकार किया है, तथा रीति–रिवाज, त्यौहारों का भी भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व बताया है।

वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता का प्रभाव और उसके अन्धानुकरण के दुष्प्रभावों को भी भारतीय समाज और संस्कृति के लिए घातक बताया है, आज इस भौतिकवादी युग में मनुष्य अपनी संस्कृति, धर्म, परम्पराएँ, रीति–रिवाज, एवं नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है, आज समाज में विषमता के कारण तथा अन्य विकृति कारणों से

पारस्परिक प्रेम और सद्भाव की कमी दिखाई पड़ रही है, ऐसी विषम परिस्थितियों में कवि समरसता का पोषण चाहता है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के काव्य की भाषा सरल, तरल और प्रवाहमयी है। आपकी कविता में कहीं भी बनावटीपन नहीं है और न ही आप व्यवसयी कवि हैं, प्रारम्भ से ही आप 'सहज कविता' के पोषक पक्षधर रहे हैं, आपकी कविता सहज हैं, कविताओं का प्रेष्य सहज है और प्रेषण साधन भी सहज है और आप भी सहज ही हैं।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का गद्य साहित्य में भी अविस्मरणीय योगदान रहा है, आपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय चेतना को ही स्पष्ट किया है।

'आदमी की तलाश' एकांकी संग्रह में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने देश के नवयुवकों को समाज और राष्ट्र के रक्षार्थ बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए कहा है तथा साम्प्रदायिक एकता को पल्लवित, पोषित करने की भी बात की है। एकांकीकार ने मानवतावादी उच्चादर्शों की महत्ता प्रतिपादित करने के साथ ही भृष्टाचार, पीत पत्रकारिता, खोखली नेतागिरी तथा स्वार्थ लोभ, अकर्मण्यता, दिखावटीपन जैसे अनेक दूषणों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है, वहीं अशिक्षा, पारस्परिक अविश्वास, अंधविश्वास, जैसी बुराईयों के प्रति जागृत किया है। आपने शिक्षा, चिकित्सा जैसी पवित्र सेवा की गरिमा–महिमा को ठेस पहुँचाने वाले अर्थ–लोलुप, चरित्रहीन, शिक्षक एवं चिकित्सक व्यवसाईयों पर भी करारा प्रहार किया है, प्रस्तुत संग्रह में धार्मिक आडम्बर, दहेज प्रथा, असन्तुलित परिवार की

व्यथा–कथा दर्शाने के साथ ही प्रौढ़ शिक्षा का महत्व एवं नई पीढ़ी की प्रगतिशीलता का भी समर्थन किया है।

आज दुनिया में जो इतनी आपा–धापी मची हुई है, हर तरफ जिधर देखिए उधर, यत्र–तत्र–सर्वत्र। उसका कारण एक ही है। मनुष्य की निम्नगा प्रवृत्तियों का उबाल और उफान और उसकी ऊर्द्धवगामिनी वृत्तियों का उत्तरोत्तर क्षय। आज हम जितने सम्पन्न होते जा रहे हैं मानसिक दृष्टि से, भावनाओं की दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से। इस गिरावट का परिणाम भी हम रोज भोग रहे हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का साहित्य इन हीन वृत्तियों से निजात तो दिलाएगा ही साथ ही हमारी ऊँची और उदात्त वृत्तियों का पोषण भी करेगा। 'आदमी की तलाश' (एकांकी संग्रह) का प्रत्येक एकांकी परिपक्व, सारगर्भित तथा लोकहित में रत है। पूर्णतः सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना से परिपूर्ण है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा द्वारा रचित नाटक 'दरोगा साहब' में पुलिस प्रशासन की भृष्ट कार्यशैली को उजागर किया गया है। पुलिस थानों के थाना प्रभारी, सब इंस्पेक्टर, जिन्हें 'दरोगा' भी कहा जाता है। कानून की रक्षा करने वाले ही आज कानून की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। 'जन सेवा एवं देशभक्ति' की बात करने वाले लोग जन–सेवा के नाम पर जनता को लूटना और देशभक्ति के नाम पर देश से गद्दारी करना उनका अब पेशा बन गया है। आज किस तरह से भृष्ट पुलिस दरोगा सीधे–साधे लोगों के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं, पैसे लेकर झूठा केस दर्ज भी कर देते हैं, गुण्डों, बदमाशों, चोरों, अवैध कारोबारियों को भी पुलिस का संरक्षण प्राप्त होता है, जिसकी वजह से अत्याचार, बलात्कार, हत्या, लूट, छीना–झपटी, अपहरण आदि अपराध समाज और देश में दिनोदिन बढ़ते जा रहे 'दरोगा साहब' को केन्द्र में रखकर लिखा गया आपका व्यंग्य

नाटक सामाजिक होने के साथ ही एक बड़े सामाजिक उद्‌देश्य को पूरा करता है।

'नेताजी' (नाटक) में नाटककार ने राजनीति का असली मुखौटा दिखाने का प्रयास किया है, आज किस तरह से राजनीति का व्यवसायीकरण किया जा रहा है, समाज और देश का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो राजनीति और राजनेताओं से प्रभावित न हो। वोट बैंक की राजनीति ने इस देश को तबाह करने का काम किया है, देश में बढ़ता भ्रष्टाचार, अपराध, आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिक दंगे तथा महँगाई आरक्षण आदि गम्भीर समस्याओं में देश के नेताओं का ही हाथ जान पड़ता है।

प्रस्तुत नाटक में नेताओं का यथार्थपरक चरित्रांकन किया गया है, वर्तमान राजनीति में जो नेता, भृष्ट, चरित्रहीन, स्वार्थी, अपराधी, चापलूस हैं वह फलता–फूलता नजर आ रहा है जबकि चरित्रवान, ईमानदार, न्यायप्रिय एवं उच्च शिक्षित लोगों की कोई पूछ–परक नहीं हैं।

वर्तमान समय में कई राजनीतिक पार्टियाँ गुण्डों–बदमाशों, भृष्ट और चरित्रहीन नेताओं को लोकसभा, विधानसभा का टिकिट देती है और ऐसे लोग गलत तरीकों से चुनाव जीतकर, विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री तक बन जाते हैं और मनमाने तरीके से देश और जनता को लूटने का काम करते हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का यह व्यंग्यात्मक नाटक सामाजिक, राजनीतिक चेतना का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हो सकता है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का 'आज का श्रवण कुमार' नाटक समाज का एक कटु सत्य है। आज इस भौतिकवादी युग में वृद्ध माता–पिता के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है यह किसी से छिपा नहीं

है। पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता के अन्धानुकरण के कारण हमारी यह वरिष्ठ पीढ़ी आज उपेक्षित सा महसूस कर रही है। आज उसकी ही संततियों द्वारा उसे परेशान किया जा रहा है। उन्हे अपमानित, प्रताड़ित किया जा रहा है और कहीं–कहीं तो उसकी सम्पत्ति छीन कर घर से निकाल दिया जाता है तथा हत्या तक कर दी जाती है।

भारत जैसे सुसंस्कृत देश में माता–पिता को ईश्वर मानकर उनकी सदैव पूजा की जाती है तथा सेवा, सम्मान का भाव उनके प्रति सदा रहा है। माँ–बाप की आज्ञा का पालन एक श्रेष्ठ पुत्र की पहचान हो सकती है। श्रीराम, श्रवण कुमार, क्षत्रपति शिवाजी, जैसे महानायकों को हमेशा सर्वश्रेष्ठ पुत्र के रूप में याद किया जाता है।

प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार आज की युवा पीढ़ी को अपने वृद्ध माता–पिता के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने के लिए कहता है, क्योंकि माँ–बाप से बढ़कर संसार में कोई नहीं हो सकता, लेकिन आज वृद्ध माता–पिता को निन्दित किया जा रहा है और उन्हें निराश्रित भी छोड़ दिया जाता है, जिसके कारण ये वरिष्ठ पीढ़ी वृद्धाश्रमों में शरण लेने पर मजबूर है, तो कहीं मन्दिरों के किनारे तथा पार्कों में अपना समय व्यतीत करते हुए देखी जा सकती है। आज इस समस्या ने समाज में विकराल रूप धारण कर लिया है। 'आज का श्रवण कुमार' नाटक सामाजिक–पारिवारिक चेतना का प्रचार–प्रसार और आज की पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

'वीरांगना रानी दुर्गावती' (नाटक) राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का प्रस्तुतनाटक, अप्रतिम देश–प्रेम, शौर्य, साहस, पराक्रम, वीरता, निर्भयता, धर्मप्रियता तथा निर्धनों, दीन–दुःखियों, वृद्धों की

सहायता की भावना से परिपूर्ण है, इस ऐतिहासिक नाटक में राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को भी रेखांकित किया गया है।

'प्रो. अच्छेलाल' डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का एक अप्रकाशित नाटक है, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने जीवन का बहुमूल्य समय एक प्राध्यापक के रूप में व्यतीत किया, एक लम्बी समयावधि तक आप अनेक महाविद्यालयों में प्रोफेसर रहे हैं, आपकी छवि एक कर्तव्यनिष्ठ, नियमनिष्ठ, स्वाभिमानी, ईमानदार, प्रोफेसर के रूप में रही है। आपने हमेशा सही को सही और गलत को गलत ही कहा है।

प्रस्तुत नाटक में आपने ऐसे शिक्षक और प्राध्यापकों का पर्दाफाश किया है, जो शिक्षा जगत में शिक्षक और प्राध्यापक के नाम पर कलंक हैं, आपका प्रो. अच्छेलाल केवल नाम का अच्छेलाल है, जबकि वह भृष्ट, बेईमान, पतित, चरित्रहीन, कर्तव्यविमुख आदि कई दुर्गुणों से भरा हुआ है। वर्तमान समय में शिक्षा और शिक्षक का स्तर बहुत नीचे गिरता जा रहा है। आज विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालया में छात्र–छात्राओं के साथ शारीरिक, मानसिक, आर्थिक शोषण आम बात हो गयी है। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर शिक्षा के नाम पर राजनीति करते हैं, एवं उनके कई भृष्ट नेताओं से संबंध भी होते। प्रो. अच्छेलाल अच्छे अंक दिलवाने के नाम पर कई छात्र–छात्राओं का शारीरिक एवं आर्थिक शोषण भी करते हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने प्रो. अच्छेलाल के माध्यम से प्राध्यापक एवं शिक्षा जगत की कमियों को समाज एवं देश के सामने रखकर बहुत ही सराहनीय काम किया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा द्वारा लिखित समीक्षा/ जीवनी एवं निबन्ध तथा कहानियाँ भी सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत हैं। 'मृगनयनी एक अध्ययन' विद्यार्थियों के उपयोगार्थ ही लिखी गयी है। तथा 'पद्मश्री' पंडित हरिशंकर की व्यंग्यात्मक कृतियों को केन्द्र में रखकर ''हिंदी व्यंग्य के शीर्ष पुरुष : पं. हरिशंकर शर्मा'' समीक्षा /जीवनी में राजनीतिक, सामाजिक एवं धर्मपरक व्यंग्यों का एक समीक्षात्मक गुलदस्ता प्रस्तुत किया है। साथ ही आपके निबन्धों का संग्रह 'निबन्धनी' भी सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना का ही जीता जागता उदाहरण है।

'वह रात' में कहानीकार ने समाज में बढ़ते अमर्यादित आचरण, चरित्रहीनता, नैतिकता के क्षरण आदि सामाजिक, सांस्कृतिक, विद्रूपताओं के बारे में जाग्रत करने का काम किया है।

fu"d"k

समर्थ कवि डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के पूर्णतः दर्शन होते हैं। सन्देश स्पष्ट है कि सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के अभाव में कोई भी समाज एवं राष्ट्र अपने गंतव्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का दृष्टिकोण यथार्थवादी है, आपको 'सहज' कविता का पुरोधा कहा गया है। भाषा सहज, सरल और सर्वग्राह्य है। आपका कृतित्व एवं व्यक्तित्व सराहनीय एवं अनुकरणीय भी है।

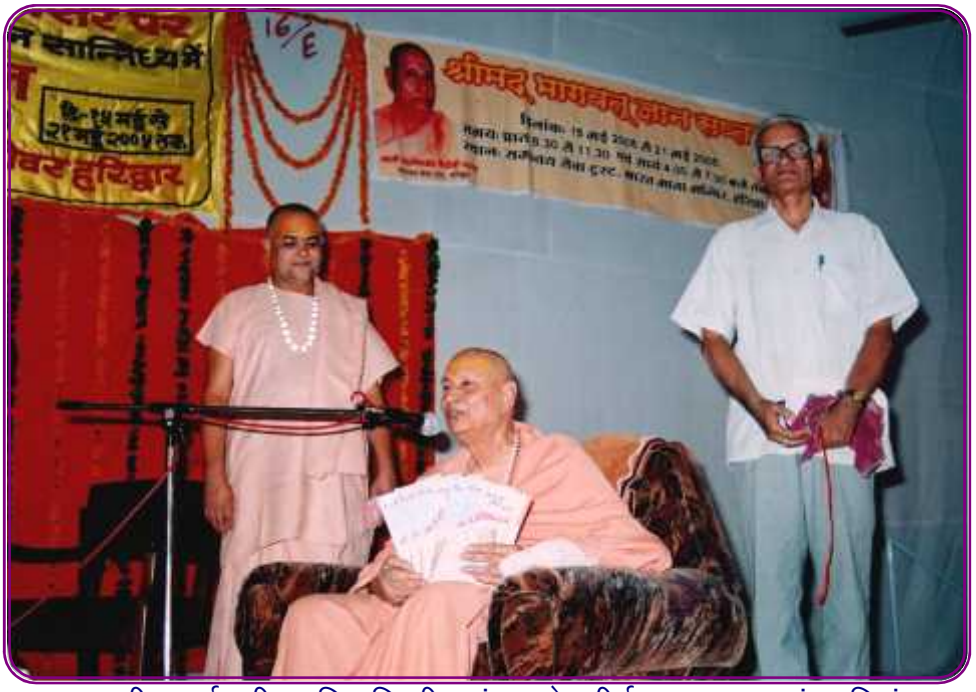

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की कृति 'हिन्दी व्यंग्य के शीर्ष पुरुष स्व. पं. हरिशंकर शर्मा का 15 मई, 2005 को हरिद्वार में भागवत कथा के मंच से लोकार्पण करते हुए प्रख्यात संत एवं साहित्यकार स्वामी सत्यमित्रानन्द जी गिरि। समीप खड़े हुए स्वामी अखिलेश्वरानन्द जी एवं प्रो. शर्मा।

शहीद स्मारक, जबलपुर में दि. 27 नव. 2004 को आयोजित सम्मान समारोह में अ.भा. सेठ गोविन्ददास सम्मान– 2004' (नाट्य विद्या हेतु) म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष श्री ईश्वरदास रोहाणी एवं साहित्यकार (पूर्व सांसद) डॉ. रत्नाकर पाण्डे (दिल्ली) से प्राप्त करते हुए। मंच पर समाज सेविका श्रीमती चन्द्रप्रभा पटेरिया, कादम्बरी के महासचिव आचार्य भगवत दुबे, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, श्री रोहाणी, डॉ. रत्नाकर पाण्डे तथा संस्था के अध्यक्ष डॉ. गार्गीशरण जी मिश्र 'मराल'।

दि. 6 नव. 14 को डॉ. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द की जयन्ती के कार्यक्रम स्व. मिलिन्द तथा माँ सरस्वती का वन्दन करते हुए डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा। निकट ही खड़े हैं साहित्यकार श्री नवीन प्रकाश।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, कोटा–शाखा एवं शासन साहित्य परिषद, राजस्थान द्वारा भारतेन्दु सभागार, कोटा में दि. 17–18 दिसम्बर, 2005 को आयोजित अन्तर प्रान्तीय साहित्यकार सम्मेलन के अवसर पर दि. 18 दिस. को 'स्व. हरिबल्लभ 'हरि' सम्मान–2005' ग्रहण करते हुए डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा। समीप खड़े है। डॉ. अरविन्द सरल, श्री रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया' तथा अन्य साहित्यकार

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश के अलावा अल्लामा इकबाल साहित्य प्रभाग द्वारा संस्कृति भवन, भोपाल में दि. 27 मार्च, 2015 को वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में सुदीर्घ साहित्य सेवा के लिए लाईफ टाइम एचीवमेन्ट सम्मान से डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा सम्मानित। सम्मान–पत्र, शाल, श्रीफल आदि भेंट करते हुए प्रदेश के प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग श्री मनोज श्रीवास्त (आई.ए.एस.), निदेशक, साहित्य अकादमी प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, उप–निदेशक सुश्री नुसरत मेंहदी।

द्विवेदी युग के सुप्रसिद्ध हास्य–व्यंग्य कवि श्री रामानुज लाल श्रीवास्तव 'ऊँट' से उनके राइट टाउन, जबलपुर स्थित निवास पर अप्रैल, 1962 में डॉ. ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श' के साथ भेंट करते हुए श्री कृष्णमुरारी शर्मा

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा दि. 4 अगस्त 2004 को पत्रकार भवन, मालवीय नगर, भोपाल में आयोजित अलंकरण–समारोह में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा को तुलसी सम्मान भेंट करते हुए म.प्र. के तत्कालीन गृह एवं विधि मंत्री श्री बाबूलाल गौर, नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष श्री स्वामी प्रसाद लोधी तथा अन्य

दि. 12 सित. 2010 को साहित्य सभा, मुरैना द्वारा 'साहित्य मनीषी सम्मान– 2010' से सम्मानित करते हुए सभाध्यक्ष डॉ. शंकर सिंह तोमर एवं अन्य पदाधिकारी

————————————